काम (वासना) का मनोवैज्ञानिक रहस्य

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अगी काम विकार पर विचार किया जाये तो यह मन के विचारों का ही खेल है। शरीर तो मात्र एक उपकरण है। क्योंकि शरीर को हमारे विचार ही चलाते है। जैसे विचार होते है वैसे ही शरीर पर उनका प्रभाव पड़ता है। शांति के विचार शरीर में शांति पैदा करते है। काम के विचार शरीर में कामोत्मेजना प्रदान करते है। काम क्रिया में व्यक्ति को शरीर का सुख नहीं मिलता है। क्योंकि इस शरीर की शक्ति खर्च होती है। लेकिन व्यक्ति को काम में अल्पकाल का मन को सुख मिलता है। काम के विचार जब इमर्ज होते है। तो उसका मन इतना एकाग्र हो जाता है कि कुछ समय के लिए वह दुनियां की सारी दु:ख व चिन्तायें भूल जाता है। क्षणभंगुर सुख के लालच में वह काम के विचारों में लिप्त होता है। इसलिए ही वह अश्लील साहित्य या अश्लील फिल्मों का सहारा लेता है। क्योंकि जैसा हम पढ़ते है या देखते है वैसे ही विचार हमारे मन में पैदा होते है और वैसा विचार और वैसा अनुभव भी होता है। लेकिन वास्तव में दु:ख चिन्ताओं से मुक्ति का यह यथार्थ उपाय नहीं है। क्योंकि इस उपाय में उनकी अमुल्य जीवनशक्ति शरीर की महत्वपूर्ण क्रियाओं को मंद करके शरीर में कामोत्तेजना प्रदान करने में लग जाती है। जिससे शरीर को हानि पहुँचती है। दूसरी बात जीवन के दु:ख और चिन्ताओं का सकारात्मक उपाय ढूढ़ने के वजाय यह पलायन का मार्ग अपनाते है। जब तक हम अपनी समस्याओं का हल नहीं ढुढ़ेगे वे फिर से हमारा पीछा करने लग जाएगी। और इस प्रकार व्यक्ति जब काम (वासना) में सुख को तलाशने लगता है वो फिर वह उसमें ही लिप्त हो जाता है। कामोत्तेजना के वशीभूत होकर जब वह मैथून करता है तो उसे और भी क्षणिक मन की शान्ति का अनुभव होता है। मैथून क्रिया में मन कुछ देर के लिए विचार पर ही एकाग्र होकर फिर शांत हो जाता है। क्योंकि मस्तिष्क को मिलने वाली प्राण उर्जा उस समय पूर्ण रूप से मैथून क्रिया में लग जाती है। इसलिए मन उस समय सोच नहीं पाता है। परिणामस्वरूप वह कुछ क्षण के लिए शांत हो जाता है। मन के शांत होने पर मनुष्य को वड़ा आनन्द आता है।

साधना के चरम विन्दू (समाधि) पर भी मन शांत हो जाता है। और इसी प्रकार का अनन्द प्राप्त होता है। इसलिए लोग संभोग से समाधि जैसे आनन्द की धारणाा बना बैठे है। लेकिन सच्चाई इससे कोसो दूर है। क्योंकि समाधि के समय मन एक परमात्मा के प्यार में इतना लवलीन हो जाता है कि वह और कुछ सोचना नहीं चाहता है। वस घण्टों उसे ही देखता रहता है उसकी ही याद में समा जाता है। वहाँ समय ही शुरू हो जाता है। दिन महिने साल से कण्ड को व्यतीत होने लगता है। परमात्म ही याद के इस सुख में वह संसार के सभी सुखों को भूल जाता है। अतिन्द्रिय सुख के झूलों में झूलता रहता है। लेकिन सेक्स में ऐसा नहीं है। और यह दौर संभोग के समय मस्तिष्क को सोचने के लिए आवश्यक प्राण उर्जा नहीं पहुँचती परिणामस्वरूप मन कुछ भी नहीं सोच पाता है व शाांत हो जाता है। अत: यह क्षणभंगुर मन की शांति सच्ची शान्ति नहीं है। संभोग के कुछ देर बाद ही मन और तेजी से भटकने लगता है। अत: इसे समाधि नहीं कहा जा सकता है। समाधि के बाद मन तो और ही शक्तिशाली हो जाता है। जैसे चाहे वैसे रचानात्मक कार्य उससे करा सकते है। मन पर नियन्त्रण हो जाता है उसे जाहँ चाहे वहाँ लगा सकते है। लेकिन संभोग के बाद तो मानो मन में शक्ति ही नहीं रही हो ऐसा अनुभव होता है। श्रेष्ठ कार्य करने का दिल ही नहीं होता है। शरीर आराम चाहता है।

इतिहासकार पृथ्वी राज चौहान के युद्ध में हारने का कारण उसका काम क्रिया में लिप्त होना बताया जाता है। कहते कि मुहम्मद गोरी से युद्ध के समय वह अन्तिम समय में भी वह संयोगिता के साथ भोग में रहता था। युद्ध के मैदान में जाने से पहले वह बुद्धि को मलिन कर चुका था। अपनी शारीरिक शक्ति संजीवन शक्ति को खर्च करके जब हवह मैदान में गया तो ठीक से रण नीति वह तैयार नहीं कर सका। परिणामस्वरूप मुहम्मद गौरी से हार गया। जिस गौरी को उसने कई बार उसने हराया था। अगर संभोग से उसे समाधि जेसा सुख व मन की शक्ति मिलती तो शायद वह बेहतर युद्ध नीति तैयार कर लेता और भारत को मुगलों के युद्ध से बचा सकता था। अगर संभोग से मन को शक्तियां मिलती और सदाकाल के लिए मन को शान्ति मिलती तो हमारे ऋषि मुनि जंगल में जाकर तपस्या नहीं करते। फिर तो वे संभोग में ही रत होकर वेदशास्त्र लिखत।, अत: संभोग से समाधि की अवधारणा एकदम गलत है। इसका प्रचार करना अर्थात मानव जाति को गुमराह करना है।

हर आत्मा चाहे वह पुरूष शरीर का हो चाहे वह स्त्री शरीर का हो काम के संस्कार तो होते ही है। जब एक दूसरे के सम्पर्क में आते है तो एक दूसरे के प्रभाव से यह संस्कार स्वत: ही इमर्ज हो जाते है। मनोविज्ञान कहता है कि जिस मनुष्य ————————20 प्रतिशत ही जीवन में जीता है। उसमें भी 10 प्रतिशत वह काम के विचारों में जीता है। बाकी 70 प्रतिशत भविष्य में तथा दस प्रतिशत भूतकाल में जीता है। काम विचारों में रहने से उसे कई प्रकार की हानि उठानी पड़ती है। बाबर-बार जिस चीज का चिन्तन करते है उसका .....बन जाता है। अत: काम के संस्कार मजबूत होने पर फिर वह काम क्रिया में रहने लगता है। आजकल जिस प्रकार की फिल्में बन रही है। उनमें तो मनोरंजन या शिक्षा या प्रेरणा नहीं के बराबर दिखती। बल्कि देह प्रदर्शन करके लोगों का ध्यान आकर्षित करते है। जिनसे लोग क्षणिक सुख का अनुभव कर अपना तन मन व धन सब बर्बाद करते है। कुछ अश्लील पत्र-पत्रिकायें उपन्यास या टी. वी. चैनल भी बाबजा में है। जिनका धंधा ही है लोगों को कामुकता ाके भड़काना। लोग कुछ देर के लिए अपने मन को संसार से हटाकर इसमें लगाते है उसमें ही सुख लेते है। अगर मन को काम से हटाकर राम में लगाना सीख जाते तो उनका लोक व परलोक दोनो ही सुधर जाता ।

विज्ञान कहता है कि हर एक स्त्री-पुरूष के रूप पर प्रभामण्डल होता है जो दिखाई नहीं देता है। प्रभामण्डल में वास्तव में हमारे विचारों का अपने चारों ओर एक घेराव को कहते है। जैसे दैवी-देवताओं के चित्रों में उनके चारो ओर एक प्रभामण्डल को दिखाते है। जिसे देवी देवताओं के दो ताज होते है। एक जत्न जड़ित दूसरा यह प्रभामंडल भी ताज के रूप में दिखत है। देवी-देवतायें पवित्र होते है। इसलिए इनके इस आधार पर इनका गायन व महिमा होती है। लेकिन कलियुगी मनुष्य पर यह ताज नही दिखाते है। क्योंकि उकना प्रभामंडल विकारी विचारों के कारण काला बन जाता है। वह अति निरश लगता है। अत: उनके प्रभामण्डल का गायन नहीं होता है।

अत: जब भी स्त्री पुरूष के प्रभामंडल में प्रवेश करती या पुरूष स्त्री के प्रभामण्डल में प्रवेश करते है तो उनमें काम के विचार पैदा होने लगते है। चुँकि दोनों के विचार समान होने के कारण उनके विचारों की आवृत्ति समान ही होती है। प्रभामंडल का विस्तार समान और अधिक और एक जैसी आकृति क `वायब्रेशन अनुसार पैदा करते है, अत: उनका प्रभामंडल अति विस्तृत लेने लगता हे। इस विस्तृत प्रभामंडल में वे अच्छा महसूस करने लगते है। इस अनुनाद के कारण हीकहा जाता है कि समान विचार के लोगों में

दोस्ती हो जाती है। या यह भी कहते है कि विचार विचार को खीचती है। या .....को खीचती है इस प्रकार विपरीत शरीर के प्रति यह लगाव का कारण बन जाता है। इस अनुभव को पुन: प्राप्त करने के लिए एक दूसरें को याद करते रहते है। बाबर-बार मिलते रहते है। इस लगाव को प्यार का नाम दे देते है। वास्तव में प्यार में भी प्रभामंडल का विस्तार होता है। लेकिन उसमें लगाव नहीं होता है। प्यार का वायबेशन श्रेष्ठ व पवित्र लेने के लिए व्यक्ति में कभी भी लगाव पैदा नहीं करते है। लेकिन काम के बायब्रेशन तो ऐसा लगाव पैदा के बिना रह ही नहीं सकते है।, इस काम के वायब्रेशन के सुख में इतना अंधा हो जाते है कि अपने भले-बुरे का भी ख्याल नहीं कर पाते। अपनी इस भवनात्मक सुरक्षा के लिए अपने साथी पर मर मिटते है। यह कामवासना उन्हें इतना अन्धा बना देती है कि वे समाज के भी खिलाफ हो सकते है। उपरोक्त विवेचन से यह स्प्ष्ट होता है कि वासना और प्रेम में फर्क होता है। प्रेम में व्यक्ति कभी अपना विवेक नहीं खोता अत: वासना को प्रेम समझना एक भूल है। अनपने को प्रेमी या प्रेमिका मानकर लोग प्रेम जेसे पवित्र अहसास को बदनाम करते है। कमजोर या विक्षिप्त मन के लोग इस वासना की भंवर जाल से अपने को बाहर नहीं कर पाते है और फिर कह देते है प्यार अंधा होता है। दिखावा होता है। आदि-आदि।

जब इस वासना का नशा उतरता है तो तब वास्तविक धरातल पर आ जाता है। फिर एक दूसरे की कमी कमजोरीयां दिखाई देने लगती है। फिर वादे-कसमें टूटने लगती है। रिश्तों में दरारें आने लगती है।

इस प्रकार मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो काम हमारे मन के संकल्पों की ही रचना है। इस संकल्पों में ही इसके सुख का अनुभव करना था अपनी शारीरिक सम्बन्ध द्वारा .....का अनुभव करना यह बड़ी भूल है। सच्चा सुख व शांति तो परमात्मा की याद में है। जिसमें हमें कुद भी खर्च नहीं करना है। वस पाना ही पाना है। लेकिन ये तो जीवन के महत्वपूर्ण रसायन खोकर क्षणिक शांति मिलती है।

बी. के. रामलाल, शान्तिवन, आबू रोड।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com